Page 2 (Sub)

शेरशाह का मुद्रा संबंधी सुधार

शेरशाह के शासक बनते समय भिन्न-भिन्न धातुओं के सिक्कों में निश्चित अनुपात नहीं था तथा खोटे सिक्के काफी मात्रा में प्रचलन में थे। उसने निम्न मौद्रिक सुधार किये -

(i) मिश्रित धातु के सिक्कों को समाप्त कर एक धातु के सिक्के जारी किए गये।

(ii) शेरशाह ने शुद्ध धातु एवं निश्चित तौल की मुद्रा चलायी। चाँदी का टंका 11½ माशे तथा ताँबे का टंका 21 माशे का होता था। संभवतः उसका चाँदी का टंका कालान्तर में रुपया कहलाया।

(iii) लेन-देन में सुविधा हेतु उसने चाँदी तथा ताँबे के टंकों के आधे, चौथाई, आठवें तथा सोलहवें भाग के सिक्के भी चलाए।

(iv) शेरशाह ने लोगों द्वारा उनकी सुविधानुसार सिक्के ढलवाने हेतु 23 टकसालें स्थापित की।

(v) शेरशाह के सिक्के गोल या वर्गाकार एवं सोने, चाँदी तथा ताँबे से निर्मित होते थे।

शेरशाह के मौद्रिक सुधार काफी महत्वपूर्ण हैं। विभिन्न तौलों के सिक्के जारी होने से लेन-देन में सुविधा हुई तथा खोटे सिक्के समाप्त हो जाने से राज्य की आर्थिक दशा में सुधार हुआ। एडवर्ड थोमस के अनुसार - "शेरशाह का मुद्रा संबंधी सुधार का कार्य इतना महान था कि इसके द्वारा प्रचलित मुद्रा प्रणाली मुगलकालीन मुद्रा प्रणाली का आधार बनी रही और ईस्ट इंडिया कम्पनी ने भी 1835 ई. तक इसे अपनाए रखा।"